RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/2027-29

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 12 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 24 अगस्त 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

दिख रही धूप-छांव बता रही है उत्तराखण्ड की राजनीति में भूचाल जरूर आएगा

शुद्धिकरण तो पार्टियों का होना जरूरी है

कार्यालय प्रतिनिधि

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की हल्द्वानी में सभा के बाद उस स्थान पर हवन-शुद्धिकरण का आयोजन करने को लेकर बबाल थम नहीं रहा है। पूरे मामले को लेकर को राजनीति की चासनी में लपेट कर लपकने की तैयारी है। यह बात भी बहुत सच है कि पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड में जिस प्रकार की राजनीति होने लगी है वह समाज में विष घोलना जैसा है। प्रदेश में दिख रही धूप

➤ समाज में जहर घोलने वालों पर अंकुश लगाना चाहिये

➤ राजनीति की आड़ में धन्ध-फन्द उजागर होने लगे हैं

छांव बता रही है कि उत्तराखण्ड की राजनीति में भूचाल जरूर आएगा। सुलग रहे युवा भले ही किसी भी पार्टी में जा रहे हों, वह स्थितियों को समझने लगे हैं कि राजनीति की आड़ में किस प्रकार से हित साधे जा रहे हैं। यही कारण है कि राजनीति की आड़ में धन्ध-फन्द उजागर होने लगे हैं। प्रत्येक जागरुक नागरिक चाहता है कि समाज में जहर घोलने वालों पर अंकुश लगाना चाहिये। इसके लिये पार्टियों का ही शुद्धिकरण होना चाहिये। आंखिर किसी भी पार्टी के अपने नियम और संकल्प होते हैं, उस अनुसार उसे पार्टी से जुड़ने वालों को परखना चाहिये। राजनीतिक दलों को अपनी शुद्धता के लिये स्पष्ट बोलना होगा जबकि राजनीति में झूठ ज्यादा बोला जाता है। यह सब कैसे होगा, कब होगा, पता नहीं। लेकिन देवभूमि में जिस प्रकार की बयार चल रही है वह आने वाली हलचल का संकेत रही है। और जिस दिन यह हलचल होगी उस दिन आन्दोलनकारी किसी पार्टी की नहीं सुनेंगे।

हाल-फिलहाल तो कांग्रेस को बड़ा मुद्दा मिल गया है कि भाजपा और उससे जुड़े लोग समाज में वैमनस्यता फैला रहे हैं, इसका बड़ा उदाहरण सभा के बाद शुद्धिकरण आयोजन है। दूसरी ओर भाजपा अपनी सफाई में कह चुकी है कि कांग्रेस अपने स्वार्थ के लिये ऐसा कर रही है।

लोक कथाएं——— यू.आर.टम्टा

रोटियाँ कहाँ गईं

शहरों में अब समय-बे-समय आये मेहमान से लोग औपचारिकतावश भी नहीं पूछते कि वह खाना खाकर आये हैं या नहीं। परन्तु गाँव में आज भी केवल औरचारिकता वश ही नहीं बल्कि सच्चे मन से, आगन्तुक से पूछा जाता है कि यदि वह खाना खाकर नहीं आये हैं तो बतायें ताकि उनके लिये तुरन्त भोजन तैयार किया जा सके।

पुराने जमाने में दूसरे गाँव का कोई भी व्यक्ति चाहे वह रिश्तेदार भले ही न हो और किसी भी वक्त पहुँचा हो, लोग सबसे पहले उसको भोजन कराते थे। आगन्तुक भी कई बार बे-समय होने पर संकोचवश कह देता- 'नहीं जी अभी घर से खाकर ही चला हूँ, अभी खाना पचा तक नहीं', भले ही उसने पिछले तीन दिन से भोजन न किया हो। जीवानन्द अपने बेटे के साथ एक दिन अपने उसी बेटे की ससुराल गया। जब वह लोग वहाँ पहुँचे तब तक घर के सब लोग खाना खाकर निवृत्त हो चुके थे। केवल उसकी समधिन ने भोजन नहीं किया था, परन्तु उसके हिस्से का भोजन इतना अधिक नहीं था कि दोनों बाप-बेटों को खिलाया जा सके। समधिन ने कहा- 'आप भोजन करके नहीं आये होंगे, मैं अभी तुरन्त सब्जी रोटी तैयार कर देती हूँ।' जीवानन्द व उसके बेटे ने तुरन्त कहा- 'नहीं जी, अभी तो घर से खाना खाकर चले हैं। दिन में ही दो बार खायेंगे क्या? अभी खाना खाये हुए मुश्किल से आधा ही घण्टा हुआ होगा।' समधिन को यकीन सा नहीं हुआ, बोली- 'आप संकोचवश ऐसा कह रहे होंगे, मैं तुरन्त खाना तैयार किये देती हूँ।' जीवानन्द ने इस बार भी कहा कि उन्होंने दिन का भोजन कुछ देर पहले ही किया है, परन्तु उनके शब्दों में अधिक जोर नहीं था। जब समधिन ने पुन: भोजन तैयार करने की जिद की तो वह बोला- 'वैसे तो में आमतौर पर दिन में एक ही बार भोजन करता हूँ, पर आपके आग्रह को मैं नहीं टाल पा रहा हूँ। आपकी जिद ही है तो कोई बात नहीं, पर ज्यादा भोजन तैयार न करना क्योंकि हम दोनों बाप-बेटों को अधिक भूख नहीं है। सिर्फ एक-एक रोटी ही खायेंगे।' समधिन समझदार थी। उसने दो सेर आटा तैयार करके रोटियाँ बना ही लीं। सब्जी भी खेत में ही उगी थी, अत: एक सेर के लगभग अरबी लेकर सब्जी तैयार कर ली गई। दाल पहले से बची ही थी। जब खाना बन ही रहा था, तभी से दोनों बाप-बेटे हाथ पैर धोकर भोजन करने के लिये तैयार बैठे थे। भोजन करने के लिये बुलाने पर, पहली ही आवाज में, वह चौके में विराजमान हो गये। ज्यों ही समधिन रोटी व सब्जी देती जाती त्यों ही वह मुँह से 'बस' कहते, पर थाली आगे बढ़ा देते। थोड़ी देर में सारी रोटियाँ उन्होंने यह कहते हुये समाप्त कर दीं- 'न खायें तो बरबाद जायेंगी। क्या फायदा?' जीवानन्द का समधी उनके आने से उनके भोजन करने तक का तमाशा देख रहा था। उसने अपने छोटे बच्चे देबू को बुलाकर कहा- 'बेटा तुम्हारी माँ ने एक टोकरी भर रोटियाँ बनाई थीं और मेहमान लोगों को तो भूख बिल्कुल थी नहीं, जरा नीचे कमरे (गोठ) में जाकर देखो तो कहीं रोटियाँ छेद से नीचे तो नहीं गिर गयीं। आखिर यह रोटियाँ कहाँ गयीं?

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

ओच्छेपन की राजनीति

राजनीति अपने लाभ के लिये होती है, सब जानते हैं लेकिन राजनीति की आड़ में हल्कापन हो जाना तो पूरे समाज में गन्द फैलाने जैसा होता है। ऐसा ही कुछ वर्तमान की राजनीति में दिखाई दे रहा है। अपनी मजबूती के लिये सारे हथकण्डे अपपाने वाले नेतागण और छुटभैये इतनी घपलत करने लगे हैं कि उनके किसी कदम पर सन्देह होने लगा है। इनकी चालों में आम जनता को उलझाया जा रहा है।

हल्द्वानी के रामलीला मैदान में कांग्रेस की सभा का मामला ही देख लें जो देशभर में छा चुका है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे इस सभा में आये और कार्यकर्ताओं में जोश भर गये। सभा के बाद भाजपा के विभिन्न संगठनों की ओर से शुद्धिकरण करवाने की बात बात करते हुए हवन और गंगाजल छिड़काव करवाया गया। इनका कहना है जिस रामलीला मंच से भगवान राम की बात होती है उसमें खड़गे ने आकर सनातक के खिलाफ बोल दिया। कांग्रेस की सभा और उसके बाद हुए इस आयोजन ने आग में घी का काम किया है। मामला संसद तक जा पहुंचा और मल्लिकार्जुन ने कहा रानजीति का कद इतना नीचे आ चुका है कि दलित समाज का अपमान किया जा रहा है। उन्होंने कहा- 'अपनी लम्बे राजनीतिक जीवन में उन्होंने ऐसा नहीं देखा जैसा होने लगा है।' कद्दावर नेता के संसद में गरजते ही उन्हें आश्वस्त किया गया कि मामले की जाँच कर दोषियों पर कार्रवाई होगी। इसके अलावा पार्टियों और नेताओं की ओर से एक-दूसरे पर आरोप लगाते बयानबाजियां तेज हैं।

इस पूरी घटना की पड़ताल की जाए तो बहुत ही सीधा सा दिखाई दे रहा है कि सभाएं हमेशा से होती रही हैं और किसी भी पार्टी के बड़े नेताओं को सुनने उनकी पार्टी के अलावा अन्य भी जाते हैं। हल्द्वानी रामलीला में न जाने कितनी सभाएं हो चुकी हैं और अनगिनत बड़े नेताओं के भाषण गूंजे हैं परन्तु एक-दूसरे को नीचा दिखाने की जो प्रवृत्ति इन दिनों में चल रही है वह बहुत ही गलत है। इस ओच्छेपन की राजनीति में सोशल मीडिया को हथियार बनाने वाले भूल जाते हैं कि वह समाज का नुकसान कर रहे हैं।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

श्रीलंका को बेलीपुलों की खेप सौंपी

कोलम्बो। भारत ने चक्रवात डिटवाह से श्रीलंका को गम्भीर रूप से नुकसान पहुंचाने के बाद क्षतिग्रस्त ग्रामीण सड़कों के पुनर्निर्माण के समर्थन में बेली पुलों की तीसरी खेप सौंपी है। 450 मिलियम डालर के पुनर्निर्माण पैकेज में शामिल 5 माड्यूल बली पुलों की कीमती 5 मिलियम डालर है।

बैकफुट पर पीएम शहबाज

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में महीनों से जारी विरोध प्रदर्शनों के बाद प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की पार्टी पीएमएल(एन) बैकफुट पर आ चुकी है। प्रधानमंत्री सलाहकार राणा सनाउल्लाह ने कहा पीओके में 99 प्रतिशत प्रदर्शनकारी देशभक्त हैं।

तय सीमा से अधिक रहने पर हिरासत में

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने देश में तय अवधि से अधिक समय से रह रहे विदेशियों की पहचान के लिये खुफिया जानकारी के आधार पर चलाए गए अभियान के दौरान 7 अफ्रीकी नागरिकों को हिरासत में लिया है। इनमें से 5 नाइजीरिया और 2 घाना के हैं।

आईएस से जुड़े समूह ने 13 की हत्या की

कांगो। युगांडा की सीमा के पास कांगो के एक गांव में इस्लामिक स्टेट (आईएस) से जुड़े समूह के आर्तोकियों ने हमला कर 13 लोगों की हत्या कर दी। आर्तोकियों ने नरसंहार करते हुए लूटपाट भी की। ये हमला मबासा प्रान्त के नजदीक बसे बनाना इकोले गांव में हुआ।

नौकरी छूटने पर अमेरिका छोड़ना होगा

वाशिंगटन। अमेरिका में छंटनी या किन्हीं कारणों से नौकरी गंवाने वाले विदेशी आईटी पेशेवरों और अन्य कर्मचारियों के लिये नया फरमान है। अमेरिका गृह विभाग ने ऐसे प्रस्ताव पर विचार किया है, जो गैर प्रवासी वीजा धारकों को नौकरी छूटने के बाद नया रोजगार खोजने के लिये मिलने वाले 60 दिनों के ग्रेस पीरियड को समाप्त कर देगा। यानी नौकरी छूटने पर अमेरिका छोड़ना होगा।

नेपाल में राजशाही वापसी के लिये अभियान

झूलाघाट। नेपाल को पुनः हिन्दू राष्ट्र घोषित करने और राजशाही को पुनर्बहाली के लिये व्यापाक हस्ताक्षर अभियान शुरू हो गया है। शाही युवा शक्ति नेपाल की ओर से यह अभियान चलाया जा रहा है।

फसक

दाज्यू, अपनी अला-बला दूसरे के डाल देने वाले ठैरे

खुरेच-खुरेच कर दूसरे की मौ घाम लगाने का मजा आता है बल

दाज्यू, अब तो सीधे-सीधे चुनाव के तैयारी दिखने लगी है। सारे के सारे मिलकर एक दूसरे की खुरचन सी निकाल रहे हैं। आरोपों से घिरे नेता अपनी अला-बला दूसरे के सिर में डालने लगे हैं। वैसे भी अपनी अला-बला दूसरे के डाल देने वाले ठैरे। दाज्यू, नीट पेपर लीक को लेकर विवादों में घिरे शिक्षा मंत्रालय में केन्द्र सरकार ने बीस दिनों के भीतर ही दूसरे उच्च शिक्षा सचिव की तैनाती कर दी। इससे पहले इस पद पर तैनात किए गए नरेश पाल गंगवार को विवादों के चलते चार्ज लेने से पहले ही हटा दिया गया। दाज्यू, हवा जेन-जी की चल रही है बल। कांग्रेस कह रही है- 'भाजपा भगवा के नाम पर लड़वा रही है' और भाजपा कह रही है- 'सनातन की बात करने पर कांग्रेस परेशाना है।'। दाज्यू, अब क्या जो कहें? जमाना बड़ा बेढप है। खुरेच-खुरेच का दूसरे की मौ घाम लगाने का मजा आता है बल। किसने कौन से सन् में हगा मूता और किस वर्ष साबुन से रगड़कर स्नान किया, सबकुछ ढूंढ-ढूंढ कर निकाला जा रहा है। सार्वजनिक भाषणों में छोटे-बड़े नेता झाड़-फूंक करते दिखाई दे रहे हैं।

दाज्यू, जब कोई किसी को बचाने वाला नहीं होगा तो अपना बचाव अपने से करना है। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के नए कुलपति की नियुक्ति के लिये 80 ने दावेदारी की है बल। उधर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय ने तय किया है कि विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर उपलब्धियां प्रस्तुत की जाएंगी। दूसरी ओर कह रहा है- 'आन्तरिक परीक्षाओं में अंक नहीं जोड़ने वाले प्राध्यापकों पर कार्रवाई होगी।' दाज्यू, प्रो.बिट्ठल कह रहे थे- 'वर्षों से इस विश्वविद्यालय में ऐसा ही हो रहा है। बच्चों को नचाया जा रहा है। पोर्टल में नम्बर डालते समय यह पता ही नहीं चलता है कि कितने में से कितने डालने हैं। जब नम्बर चढ़ा दो तो पता चलता है कि अलां में से नहीं फलां में से नम्बर डालने थे।' दाज्यू, विश्वविद्यालय भी दूसरे के सिर बला डालने जैसी बात कैसे कर सकता है? बच्चों के नम्बर दिखने चाहिये और क्या?

बदरीनाथ चोरी मामले में हिमाचल निवासी जेपी कम्पनी का सुरक्षाकर्मी मनोज कुमार भी पकड़ लिया गया है। सीसीटीवी में वह दान सामग्री में से कुछ उठाकर जेब में डालता दिखाई दे रहा है। दाज्यू, सीसीटीवी में दिखाई देने वाले तो पकड़े जाएंगे लेकिन जो दिखाई नहीं दे रहे उनका क्या होगा? सब दूसरे के सिर डालने जैसा ठैरा। खा-पीकर चौखा बने रहने और लपक-झपक कर किसी कुर्सी को घेरने वालों को भगवान का डर नहीं होता है बल।

दाज्यू, रानीखेत में 12 साल पहले गबन मामले में अब जांच समिति गठित हुई है बल। 2007 से 1014 के बीच को आपरेटिव डेयरी फेडरेशन के तत्कालीन प्रबन्ध निदेशक की ओर से गनियाद्योली में पर्यटन आवास गृह का निर्माण होना था लेकिन नहीं बन पाया। इसके बाद शिकायत हुई कि बिना काम के 40 लाख धनराशि का दुरुपयोग हो गया। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए काम काज कैसे होते हैं।

दाज्यू, हमारी मुनिया इस बार खुश है। कह रही थी- 'प्रोफेसर बन जाऊंगी अब। असिस्टेंट प्रोफेसर से जैसे ही एसोसिएट प्रोफेसर बनी थी नोटों की बरसात हुई। सारा दरिद्र दूर हो जाता है। फण्ड में भी रोकड़ा है ही। वह सचिव था जिसने दुनियाभर के बबाल लगाये थे वर्ना तो अभी तो और बढ़ोत्तरी हो जाती।' दाज्यू, क्या जो कहें? कागजों की लुग्दी समेट कर रुपयों की च्वेड़ाच्वेड़ करने वाले कितनी देर पाखाने में बैठते हैं यह तो उनकी दवाईयों का हिसाब ही बता सकता है। क्या जो करें खचोर कर। -तुम्हारा भुली झकरुवा

हेंवल घाटी में रक्षासूत्र बांधकर पेड़ों को बचाने का संकल्प

टिहरी। चिपको आन्दोलन के लिए विख्यात अदवाणी के जंगल में फायर लाइन काटने के नाम पर चीड़ के जंगल को काटने के विरोध में हेंवल घाटी के महिला संगठनों, चिपको कार्यकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के द्वारा पेड़ों पर रक्षा सूत्र बांधकर पेड़ों को बचाने का संकल्प लिया गया। पेड़ों पर रक्षा सूत्र बांधते हुए पेड़ों की निर्मम कटाई देखकर महिलाऐं भावुक हो गईं। 87 वर्षीय चिपको नेत्री सुदेशा बहन ने घन लगे वृक्ष पर रक्षासूत्र बांधकर कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने नई पीढ़ी की महिलाओं और युवाओं कहा कि हमने इस जंगल को अपने संघर्ष से बचाया है। अब यह तुम्हारी जिम्मेदारी है कि इस जंगल को आगे भी बचा कर रखो।

चिपको कार्यकर्ता व बीज बचाओ आन्दोलन के प्रणेता विजय जड़धारी ने चिपको आंदोलन की घटनाओं को याद करते हुए कहा कि बड़ी मात्रा में सुरक्षा बलों की तैनाती भी चिपको आन्दोलन कारियों के हौसलों को नहीं डिगा पाई। उन्होंने आगे कहा कि फायर लाइन काटने के बहाने जंगल काटने के लिए अदवाणी के जंगल को ही चुनना सरकार के द्वारा उत्तराखण्ड के जंगलों पर डकैती डालने का प्रयोग मात्र है। आशंका है कि फायर लाइन के नाम जंगलों का कत्लेआम करने की साजिश की जा रही हो। चिपको कार्यकर्ता दयाल भाई ने भी आशंका व्यक्त की कि सरकार फायर लाइन काटने के नाम पर जंगलों को तबाह करने के प्रयास कर रही है। अदवाणी निवासी पूर्व प्रधानाचार्य और सामाजिक कार्यकर्ता किशन सिंह रावत ने विभिन्न गांवों से आई महिलाओं और युवाओं का धन्यवाद देते हुए कहा कि आपके आने से अदवाणी के निवासियों को सम्बल मिला है। ग्राम प्रधान विजय भण्डारी ने वन विभाग की कारगुजारियों पर सवाल उठाते हुए कहा कि बिना पंचायत को सूचित किये हुए चुपके जंगल का कटान आपराधिक कार्य है। जिला पंचायत सदस्य शीशपाल सजवाण ने सभी लोगों का आह्वान किया कि हम अपने जंगल को बरबाद नहीं होने देंगे और इसके लिए हर तरह से संघर्ष करेंगे। प्रधान भंडारगांव एवं प्रधान संगठन के पदाधिकारी सन्दीप पैन्यूली ने कहा कि ब्लाक का प्रधान संगठन यहाँ के जल, जंगल और जमीन के प्रति सम्वेदनशील होकर ठोस कदम उठाने के लिए चिन्तन कर रहा है। पूर्व प्रधान फूलदास डौंडिया और सामाजिक कार्यकर्ता धूम सिंह मंद्रवाल ने आह्वान किया कि अदवाणी का जंगल हमारी विरासत है और हम सरकार के कुत्सित इरादों को सफल नहीं होने देंगे। संचालन करते हुए अरण्य रंजन ने सरकार और विभाग के द्वारा हरभरे जंगल काटने को गहरी साजिश का हिस्सा बताया। अदवाणी का जंगल अनमोल विरासत है जहाँ से देश और दुनिया के लोग पर्यावरण संरक्षण की सीख लेते हैं। अरण्य रंजन ने सरकार को दुत्कारते हुए कहा कि वन विभाग ने अदवाणी के ऐतिहासिक जंगल को काटने दुस्साहस किया है। इस प्रकरण की गहराई से जांच होनी चाहिए और दोषियों को बख्शा नहीं जाना चाहिए। अदवाणी की सुविधा देवी, रोशनी देवी, महिला जागृति परिषद की सरिता मनवाल, सुनीता भण्डारी और प्रतिमा देवी ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर माउंटेन फूड कनेक्ट की समीरा, सुनीता सहित हेंवल घाटी के एक दर्जन से अधिक गांवों से आयी 100 से अधिक महिलाओं, युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम में प्रतिभाग कर जंगल को बचाने का संकल्प लिया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्मरण जन्म शताब्दी वर्ष पर उत्तराखण्ड सरकार ने सुध ली न केन्द्र सरकार ने

भौतिकविद डॉ.डी.डी.पन्त उत्तराखण्ड की धरोहर

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

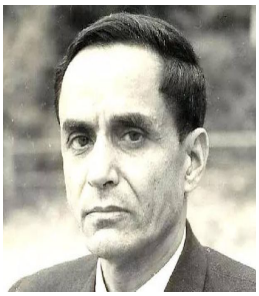

डॉ. डी.डी. पन्त, जिनका पूरा नाम देवी दत्त पन्त था, उनका जन्म आज के पिथौरागढ जिले के गणाईगंगोली से आगे बनकोट के पास एक गाँव देवराड़ी पन्त में 14 अगस्त 1919 को श्री अम्बा दत्त पन्त जी के घर में हुआ। इनके पिता एक वैद्य थ। प्रो. पन्त की प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई। पिता अम्बा दत्त वैद्यकी से गुजर-बसर करते थे। बालक देवी की कुशाग्र बुद्धि गाँव में चर्चा का विषय बनी तो पिता के सपनों को भी पंख लगने लगे। किसी तरह पैसे का इन्तजाम कर उन्होंने बेटे को काण्डा के जूनियर हाईस्कूल और बाद में इण्टर मीडिएट तक की पढ़ाई के लिए अल्मोड़ा भेजा। अल्मोड़ा तक आजादी की लड़ाई की आंच पहुँच चुकी थी। देवी दत्त को नई आबोहवा से और आगे जाने की प्रेरणा मिली। घर के माली हालात आगे पढ़ने की इजाजत नहीं देते थे। तभी पिता के एक मित्र बैतड़ी (सीमापार पश्चिमी नेपाल का एक जिला) के एक सम्पन्न परिवार की लड़की का रिश्ता लेकर आए। पिता- पुत्र दोनों को लगा कि शायद यह रिश्ता आगे की पढ़ाई का रास्ता खोल दे। इस तरह इण्टरमीडिएट के परीक्षाफल का इन्तजार कर रहे देवीदत्त पढ़ाई का रास्ता खुलने की आस में दाम्पत्य जीवन में बंध गए। इण्टर के बाद देवी दत्त ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया।

यहाँ से उन्होंने भौतिक विज्ञान में मास्टर्स डिग्री पाई। ख्यातिनाम विभागाध्यक्ष प्रो. आसुंदी को इस प्रतिभाशाली गरीब छात्र से बेहद स्नेह था। देवी भी उन्हीं के निर्देशन में पीएच.डी. करना चाहते थे। प्रो. आसुंदी ने वजीफे के लिए तत्कालीन वाइस चांसलर डा. राधाकृष्णन से मिलने का सुझाव दिया। पन्त डा. राधाकृष्णन के पास अपनी अर्जी लेकर पहुँचे। बड़ा रोचक प्रसंग है। राधाकृष्णन स्पॉंडिलाइटिस के कारण आरामकुर्सी पर लेट हुए काम कर रहे थे। पन्त की अर्जी देकर उनका जायका बिगड़ गया। बोले- आसुंदी अपने हर छात्र को स्कालरशिप के लिए मेरे पास भेजे देते हैं। हमारे पास अब पैसा नहीं है। निराश देवी दत्त वापस लौट आए। आसुंदी ने उन्हें ढाढ़स बंधाया और बेंगलूर में रमन साहब के पास जाकर रिसर्च करने का निर्देश दिया। इस तरह द्योराड़ी का देवी दत्त महान वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन का शिष्य बन गया। यद्यपि उनका पीएचडी रजिस्ट्रेशन बीएचयू में प्रो. आसुंदी के साथ ही था। शोधकार्य पूरा होने पर देवी दत्त को डी.एससी. की उपाधि मिली। स्पेक्ट्रोस्कोपी में उनके योगदान के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया। इनमें अमेरिका का प्रतिष्ठित सिगमा-साई अवार्ड, इण्डियन एकेडमी ऑफ साइंस की फैलोशिप, रमन सेंटेनरी अवार्ड, आसुंदी सेंटेनरी अवार्ड आदि को गिना जा सकता है। नैनाताल परिसर की फोटोफिजिक्स लैब एक तरह से प्रो. पन्त के नाम से देश की विज्ञान बिरादरी में

जानी जाती है। प्रो. पन्त को इस लैब से बेहद प्यार था। फोटोफिजिक्स लैब प्रो. पन्त के लिए जीवनीशक्ति से कम नहीं थी। अपनी अधूरी आत्मकथा की भूमिका में उन्होंने लिखा है, ''मेरी आकांक्षा मृत्युपर्यन्त काम में लगे रहने की है। परिस्थितियों के घेरे में सम्भवत: लैब में आता ही रहूँगा। जमीन से तेल ड्रिल करने वाली कम्पनियां कहती हैं यदि तेल निकलना बन्द हो जाय तो बोर करना बन्द कर दें। इस नियम का यथासम्भव पालन मैं करना चाहूँगा। पर तेल न निकलता हो तो भी बोर तो चलाना ही पड़ेगा, इस आशा में कि शायद कुछ निकले ही।'' लेकिन नियती को कुछ और मंजूर था। रहस्यमय परिस्थितियों में एक दिन फिजिक्स डिपार्टमेंट का पूरा भवन आग की भेंट चढ़ गया। सम्भवत: यह फोटोफिजिक्स लैब के अवसान की भी शुरुआत थी। कई वर्षों तक अस्थाई भवन में लैब का अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश की गई। बाद में फिजिक्स डिपार्टमेंट के भवन का पुनर्निर्माण हुआ तो फोटोफिजिक्स लैब को भी अपनी पुरानी जगह मिल गई। लेकिन अब इसका निश्चेत शरीर ही बाकी था, आत्मा तो शायद आग के साथ भस्मीभूत हो गई। प्रो. पन्त का स्वास्थ्य भी अब पहले जैसा नहीं रहा।

वह नैनीताल छोड़ हल्द्वानी रहने लगे। इस लैब ने कई ख्यातनाम वैज्ञानिक दिए और कुमाऊँ जैसे गुमनाम विश्वविद्यालय की इस साधनहीन प्रयोगशाला ने फोटोफिजिक्स के दिग्गजों के बीच अपनी खास जगह बनाई। जिस किसी को प्रो. पन्त के साथ काम करने का सौभाग्य मिला, वह उनकी बच्चों जैसी निश्छलता, उनकी बुद्धिमत्ता, ईमानदारी से सनी उनकी खुद्दारी और प्रेम का मुरीद हुए बिना नहीं रहा। निराशा जैसे उनके स्वभाव में थी ही नहीं। चाहे वह रिसर्च का काम हो या फिर कोई सामाजिक सरोकार, प्रो. पन्त पहल लेने को उतावले हो जाते थे। अपने छात्रों को वह अक्सर उनके चुप बैठे रहने पर लताड़ते और सामाजिक सरोकारों के लिए आवाज उठाने को कहते। गांधी के विचारों को उनकी जुबान ही नहीं, जीवन में भी पैठे हुए देखा जा सकता है। जो कहते वही करते और ढोंग के लिए वहाँ कोई जगह नहीं थी। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि अगर आप अपने विचारों पर दृढ़ रहें तो हताशा, निराशा और दु:ख मुश्किल से मुश्किल हालात में भी आपको नहीं घेरेंगे। समय के सूक्ष्मतम हिस्सों के पारखी इस विज्ञानी ने उत्तराखण्ड के अच्छे समय के लिए अपना जीवन तभी से खपाना शुरू कर दिया, जब सीवी रमन के भारतीय मौसम विज्ञान विभाग में वैज्ञानिक बनने के प्रस्ताव को ठुकराया। उत्तराखण्ड के आम आदमी के विकास के लिए चिन्तित इस विज्ञानी को अनेक सम्मान मिले। 1960-61 में फुलब्राइट फैलोशिप, 1969 में अमेरिका की सिग्मा-साई फैलोशिप, इण्डियन अकादमी ऑफ बंगलौर की फैलोशिप, सीवी रमन सेंटेनरी सम्मान, पहला आसुंदी सेंटेनरी सम्मान, लेकिन तत्कालीन कुलाधिपति से वैचारिक मतभेद के चलते विवि के कुलपति से इस्तीफा देने के बाद जिस प्रकार जनता आन्दोलित हुई और कुलाधिपति को अपना कदम पीछे खींच उन्हें दोबारा यह दायित्व दिया गया, वह सम्मान निश्चित रूप से अप्रतिम कहा जाएगा।

आणविक भौतिकी को पन्त किरण से जगमगाने वाले उत्तराखण्ड के महान वैज्ञानिक प्रो. डीडी पंत की मेधा को सम्मान देने वाली पूरी दुनिया के इतर भारत ने उन्हें भुला दिया है। नोबल पुरस्कार से सम्मानित महान वैज्ञानिक सीवी रमन के प्रिय शिष्य रहे पन्त का यह जन्म शताब्दी वर्ष है, जिसकी खबर उत्तराखण्ड सरकार ने ली न केन्द्र सरकार ने। विज्ञान के आविष्कारों के अलावा पन्त के योगदान शिक्षा के उन्नयन में भी कम नहीं हैं। 1973 में स्थापित कुमाऊँ विश्वविद्यालय को इसके पहले कुलपति के रूप में अपनी विस्तृत दृष्टि से उन्होंने जिस प्रकार देश-दुनिया में विख्यात किया, अब तक की राज्य सरकारें उसी का संज्ञान ले लेतीं तो वैज्ञानिक, ब्यूरोक्रेट, शिक्षाविद, ईमानदार नागरिकों की भावी खेप निरन्तर प्राप्त होती रहती। यूरेनियम के लवणों की स्पेक्ट्रोस्कोपी पर हुए इस शोध पर अब तक लिखी गई सबसे चर्चित पुस्तक फोटोकेमिस्ट्री ऑफ यूरेनाइल कम्पाउण्ड, ले. राबिनोविच एवं बैडफोर्ड में दर्जनों बार पन्त के काम का वर्णन पन्त की महानता को ही दर्शाता है। यह वही पुस्तक है, जिसे भौतिकी का बाइबिल भी कहा जाता है। उन्होंने अमेरिका में अपना भविष्य तलाशने के बजाय अपने देश में रहकर काम करने को प्राथमिकता दी।

उनकी पहली महिला शोध छात्रा इस पर विस्तार से बताते हुये कहती हैं- 'प्रतिदीप्ति' पर दुनिया में पहला शोध प्रो. पन्त जी ने ही किया। प्रतिदीप्ति किसी पदार्थ का वह गुण है जिसके कारण वह अन्य स्त्रेतों से निकले विकिरण को अवशोषित कर तत्काल उत्सर्जित कर देता है। इसके परीक्षण के लिये हमें मद्रास जाना पड़ा। इस कार्य को देखकर वहाँ के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये। इस शोध ने वैज्ञानिक जगत में हलचल मचा दी। उसके तीन साल बाद तीन वैज्ञानिकों को इस पर नोबेल पुरस्कार मिला। ऐसे में यह विचारणीय है कि यदि पन्त जी को भारत में ऐसी सुविधा मिल जाती या वे स्वयं अमेरिका चले गये होते तो निश्चित रूप से अपने गुरु प्रो. सीवी रमन के बाद यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले डीडी पन्त दूसरे भारतीय वैज्ञानिक होते।

स्व. पंत ने उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के लिए युवाओं के साथ मिलकर उत्तराखण्ड क्रान्ति दल का गठन किया। दल के संस्थापक अध्यक्ष बनकर राज्य आन्दोलन की शुरुआत की। डा. पन्त जी की इकोलाजी के साथ ही खेल, राजनीति और साहित्य में भी रुचि थी, वह स्माल इज ब्यूटीफुल के जबरदस्त समर्थक थे। 1979 में जब पृथक उत्तराखण्ड राज्य के लिये एक राजनीतिक दल बनाने की बात हुई तो वह तत्समय गठित उŸाराखण्ड Øान्ति दल के संस्थापक अध्यक्ष भी बने और उन्होंने भविष्य में राज्य निर्माण और उसके पुर्नगठन का भी खाका खींचा। अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ लोकसभा क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव भी लड़ा, लेकिन लोगों को नेता ही पसन्द आये और उदार सोच के पन्त जी चुनाव हार गये। डा. पन्त एक बहुआयामी तथा सरल व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे, यदि वह अपने ही देश में रहकर सेवा करने के लिये लालायित न होते तो अवश्य ही उनकी मेधा उनको नोबल पुरस्कार भी दिला सकती थी। यह वर्ष उनका जन्म शताब्दी वर्ष है, इस अवसर पर मेरा पहाड़ उनका सादर स्मरण करता है और सरकार से मांग करता है कि उनके नाम पर एक विश्वविद्यालय पिथौरागढ़ में खोला जाय, जिसमें उनके सारे शोध, शोध पत्र आदि का एक संग्रहालय भी बनाया जाय। हमारा समाज उनका ऋणी है। गांधी के रास्ते पर चलने वाले प्रो. पन्त का पारिस्थिकी में गहरा विश्वास है। वह अक्सर कहते हैं कि कुदरत मुफ्त में कुछ नहीं देती और हर सुविधा की कीमत चुकानी पड़ती है। अपने जीवन में उन्होंने बहुत कम सुविधाएं इस्तेमाल कीं लेकिन बदले में उनकी जरूरत से ज्यादा कीमत चुकाई।

ज्योतिष की बातें 295

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह गुरु अपनी उच्चराशि कर्क में, सूर्य स्वराशि सिंह में, बुध मित्रराशि सिंह में, शनि समराशि मीन में, मंगल शत्रुराशि मिथुन में, शुक्र नीच राशि कन्या में गोचर करते रहेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मकर, कुम्भ व मीन राशि में क्रमश: गोचर करेगा।

रक्षाबन्धन- रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण शुक्लपक्ष अपराह्न व्यापिनी पूर्णिमा तिथि भद्रोपरान्त मनाया जाता है। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा तिथि तीन मुहूर्त से अधिक हो तो दूसरे दिन ही रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। इन नियमों के अनुसार इस वर्ष शुक्रवार 28 अगस्त 2026 को रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाएगा। यजुर्वेदियों का उपाकर्म भी इसी दिन होगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

हलचल सीटों पर

जागेश्वर सीट पर कठिन है डगर

विधानसभा चुनाव के लिये हो रही जोड़ तोड़ में इस बार जागेश्वर सीट में चेहरे बदलने की बात कही जा रही है। इस सीट पर कांग्रेस के गोविन्द सिंह कुन्जवाल की धार के अलावा भाजपा की ओर से बाजी पलट देखी गई है लेकिन इस बार डगर कठिन है। चुनाव के लिये सरसराहट लिये दन्या क्षेत्र में कुन्जवाल के भतीजे दिनेश कुन्जवाल की चर्चा भी हो रही है क्योंकि उन्होंने कांग्रेस छोड़ यूकेडी का दामन पकड़ लिया है। भाजपा की ओर से धनबल वाले प्रत्याशियों को उतार कर बाजी पलटने का खेल इस बार कठिन लग रहा है क्योंकि संगठन के भीतर चल रही खुसर-फुसर हैरानी करने वाली है। दूर तक फैली विधानसभा में फिलहाल सभी पार्टियां कार्यकर्ताओं को उनकी क्षमता के अनुसार साध रही हैं।

चम्पावत सीट पर हिलोरे खाते नेता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की चम्पावत विधानसभा सीट पर नेतागण हिलोरे खाते दिख रहे हैं। कहने को तो धामी के अन्यत्र सीट से लड़ने की बात भी कही जा रही है लेकिन इस सीट को वह जरूर चाहेंगे। इसके लिये श्रीमती गीता धामी भी हर प्रकार से जुटी हुई लगती हैं। भाजपा के नेता रहे दीप पाठक ने बयान जारी कर कहा है यदि जनता चाहेगी तो वह चुनाव मैदान में होंगे। इसका मतलब है कि चुनाव गणित में कुछ तो होना ही है।

भाजपा संगठन सारी स्थितियों को देखते हुए किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ रहा है और हर वर्ग को मनाकर समझाकर पक्ष में किया जा रहा है। दूसरी ओर कांग्रेस का जोश इस बार दोगुना है। पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल लगातार अपनी टीम के साथ सम्पर्क साध रहे हैं।

लालकुआ सीट पर बड़ों की नजर

हल्द्वानी से लगी हुई लालकुआ सीट पर दावेदारी के लिये कांग्रेस और भाजपा की ओर से कई दावेदार हैं लेकिन दोनों ही पार्टियों के बड़ों की नजर इसमें है। माना जा रहा है कि बड़ी नेता अपनी पसन्द के यानी अपने खासम-खास को टिकट दिलवाने के लिये चाल चलेंगे। टिकट को लेकर इन दिनों स्थानीय नेता दमखम दिखाने लगे हैं और जता रहे हैं कि यदि पार्टी उनपर भरोसा करती है तो वह जीतने में सक्षम हैं। विधायक और पूर्व विधायक गण भी टिकट की चाह में हैं लेकिन पूरी सीट का चुनाव गणित नये चेहरों के बीच होने की सम्भावना है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हरिद्वार में डाक कांवड़ का सैलाब

हरिद्वार। धर्मनगरी में डाक कांवड़ यात्रियों का सैलाब उमड़ चुका है। दिल्ली, यूपी, हरियाणा, राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों से लाखों की संख्या में कांवड़ यात्रियों की टोली आ रही है। इसमें तीस किमी का लक्सर रोड भरा हुआ है। अभी तक 8 करोड़ से अधिक यात्रियों के हरिद्वार आने की बात कही जा रही है।

दयूरी-चल्थी मार्ग का निरीक्षण

चम्पावत। जिलाधिकारी मनीष कुमार ने निर्माण के लिये प्रस्तावित दयूरी-चल्थी मोटर मार्ग का स्थलीय निरीक्षण करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों से सड़क निर्माण के लिये आवश्यक तकनीकी एवं विभागीय कार्रवाई को प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाने के निर्देश दिये।

दुपहिया आवाजाही पर रोक की मांग

अल्मोड़ा। सेवानिवृत्त केन्द्रीय कर्मचारी कल्याण समिति की बैठक में नगर की समस्याओं पर चर्चा के दौरान मुख्य बाजार में दुपहिया वाहनों की आवाजाही पर पूर्ण रूप से रोक लगाने की मांग की गई। साथ ही नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों के खिलाफ कार्रवाई को कहा।

भटवाड़ी गांव में सड़क आन्दोलन

उत्तरकाशी। वर्षों से सड़क न बनने पर भटवाड़ी गांव वासियों द्वारा आन्दोलन किया जा रहा है। चेतावनी दी है कि यदि एक माह के भीतर सड़क कार्य आरम्भ नहीं किया गया तो गंगोत्री हाईवे जाम कर देंगे।

राज्य आन्दोलन कारियों का घेराव

देहरादून। चिन्हीकरण और क्षैतिज आरक्षण की मांग को लेकर राज्य आन्दोलनकारी संगठन ने जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव किया। कहा कि 6 महीने में चिन्हीकरण का वादा करने के बाद भी कुछ नहीं हुआ। इस प्रकार की उपेक्षा बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

रानीबाग चित्रेश्वर को लेकर प्रदर्शन

हल्द्वानी। रानीबाग स्थित प्राचीन चित्रेश्वर मन्दिर पर कथित अतिक्रमण को लेकर पहाड़ी आर्मी और विभिन्न सामाजिक संगठनों का प्रदर्शन जारी है। इनकी मांग है कि मन्दिर भूमि से अतिक्रमण हटाने के अलावा इसकी निष्पक्ष जांच की जाए कि किन लोगों की सह पर इस ऐतिहासिक स्थल पर कब्जा किया जा रहा है। चेतावनी दी है कि यदि कार्रवाई नहीं हुई तो यह आन्दोलन व्यापक स्तर पर फैलेगा।

उल्लेखीन है कि जियारानी को लेकर चर्चित रानीबाग क्षेत्र में अतिक्रमणकारियों की नजर है और वर्तमान में काफी घनी आबादी भी देखने को मिल रही है। इस धाम की मान्यता को लेकर प्रतिवर्ष उत्तरायणी मेला होता है।

परिक्रमा

फचैऽक

किसम किस्माक अणकसै चोर, पैद है गई यां हमा्र देश में नानतिनना्क पर्च मन्दिरकि भेट, सटकै ल्ही गै अलगै भेष में सटकै ल्ही गै अलगै भेष में, ठौरठौर तवमुस जास घुसि गई आपण ला्द और गा्दै लिजी, तौं सबासब देश कैं चुसि नई सबै सरकारा्क दगड़ुवे भै जब, हल्क है जां तब डंडक जोर बिबस्ता चौपट भै जब आई, किसम किस्माक अणकसै चोर।

गणेश पाण्डेय

मलारी-नीती हाईवे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, नाला उफनाने से आफत

चमोली। चीन सीमा से लगी नीती घाटी को जोड़ने वाले ज्योतिर्मठ-मलारी नीती हाईवे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है लेकिन इस बार के मानसून में बुग्याली क्षेत्र में बादल फटने से आफत मची है। क्षेत्र में तमक नाला उफनाया और भयंकर बाढ़ में बेली ब्रिज समेत ज्योतिर्मठ-मलारी नीती हाईवे का सौ मीटर हिस्सा बहा ले गया। इससे नीती घाटी का देश के शेष हिस्सों से सम्पर्क कट गया।

सीमान्त की इस आपदा के बाद शासन प्रशासन लगातार निगरानी कर रहे हैं। सीएम ने मण्डलायुक्त से जानकारी लेते हुए राहत-बचाव, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति और कनेक्टिविटी बहाली के निर्देश दिये। साथ ही प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य सामग्री, दवाओं समेत अन्य जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति निर्बाध रखने को कहा। जरूरत पड़ने पर वैकल्पिक मार्ग व अन्य माध्यमों से भी ग्रामीण क्ष्लेत्रों तक सामग्री पहुंचाने को निर्देशित किया।

सीमान्त के इस क्षेत्र में तमकनाला में अत्यधिक जलप्रवाह और बड़ी मात्रा में मलबा आने की घटना का सरकार वैज्ञानिक अध्ययन कराएगी। आपदा प्रबन्धन सचिव विनोद कुमार सुमन ने इसके लिये देश के प्रमुख वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों को पत्र भेजकर घटना के कारणों और भविष्य के सम्भावित जोखिम का विस्तृत अध्ययन करने का अनुरोध किया है।

काण्डा में अवैध खनन से प्रभावितों के मामले में कोर्ट ने जवाब मांगा है

नैनीताल/बागेश्वर। हाईकोर्ट ने काण्डा क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों में अवैध खड़िया खनन से ग्रामीणों के मकान में आई दरारों, पेयजल योजनाएं ध्वस्त होने व अन्य नुकसान के सम्बन्धित जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए सरकार से पूछा है कि पिछले डेढ़ साल में रास्तों, दरारों को पाटने के लिये क्या कदम उठाए गए। सरकार को तीन सप्ताह में इसका जवाब देने को कहा है।

मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए आदेश दिया। न्यायमित्र दुष्यन्त मैनाली की ओर से कोर्ट को बताया गया कि पिछले डेढ़ साल से कोर्ट के आदेश पर खनन पर पाबन्दी है। खनन कारोबारियों के प्रार्थनापत्रों पर सुनवाई हुई लेकिन जिन ग्रामीणों की ओर से पत्र भेजकर व्यथा बताई गई, उनकी समस्याओ के समाधान को सरकार ने अब तक प्रयास नहीं किये। आज भी अवैध खनन के कारण रास्ते टूटे हैं, घरों में दरारें हैं। पेयजल योजनाएं ध्वस्त हो चुकी हैं।

द्वाराहाट में एआई व रोबोटिक्स कोर्स

द्वाराहाट। उत्तराखण्ड तकनीकी विश्व विद्यालय के बीटीकेआईटी परिसर में में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स के दो नए बीटेक पाठ्यक्रम इसी शैक्षणिक सत्र से शुरू हो रहे हैं। तकनीकी शिक्षा मंत्री धन सिंह रावत ने इन स्व वित्तपोषित पाठ्यक्रमों के संचालन को मंजूरी दे दी है। इसका उद्देश्य छात्रों को अत्याधुनिक और वैश्विक तकनीक से जोड़ना है, जिससे उन्हें उभरते तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जा सके। मंत्री ने बताया कि एआई, मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षित युवाओं की मांग तेजी से बढ़ रही है। इसी को देखते हुए सरकार ने राजकीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में आधुनिक पाठ्यक्रमों के संचालन का निर्णय लिया है। द्वाराहाट में इनमें प्रवेश शुरू हो चुके हैं।

प्रोफेसर सुशील जोशी का काव्य संग्रह

'सरगोशियों का स्वर' जिया हुआ सच है

अल्मोड़ा। 'सरगोशयों का स्वर' प्रो.सुशील जोशी का प्रथम काव्य संग्रह है, जो जिया हुआ सच ही है। लेखक ने जिस कोमलता के साथ शब्दों को इसमें पिरोया है, उतना की गुस्सा समाज में फैलती विद्रूपताओं को लेकर इसमें दिखाई देता है। अपने शिक्षक धर्म के अलावा डॉ. जोशी सामाजिक चिन्तन में लगे रहे हैं तो स्वाभाविक है उनमें पहाड़ की प्रकृति धूप-छांव का असर है और वह चाहते हैं कि हमारा सामाजिक तानाबाना कलुसित करने वाले न पनपें।

एसएसजे विवि के रसायन विज्ञान के प्राध्यापक प्रो. सुशील जोशी इस काव्य संग्रह का विमोचन भी इसी अंदाज में हुआ, जिसमें क्या अतिथि क्या दर्शक सब खुलकर अपनी बात करने लगे। डॉ. पूरन जोशी ने काव्य संग्रह के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किस प्रकार विज्ञान वर्ग के शिक्षक होने के बावजूद प्रो.जोशी की साहित्यिक प्रतिभा कविताओं में उजागर हुई है। मुख्य अतिथि महादेवी सृजन पीठ के पूर्व निदेशक एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्ष रहे साहित्यकार प्रो. देव सिंह पोखरिया ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सुशील जोशी की कविताएं विज्ञान समाज, प्रकृति तथा अन्तर्विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान साबित होंगी। एसएसजे के पूर्व कुलपति वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने कहा कि प्रो. जोशी की रचनाओं में प्रयोगधर्मिता भाव और वैचारिकी का सुन्दर संयोजन है। उन्होंने कहा कि प्रो.जोशी की कविताएं विज्ञान की पृष्ठभूमि वाले रहे महान साहित्यकार अज्ञेय के साहित्य के निकट दिखाई देती हैं। वरिष्ठ पत्रकार नवीन बिष्ट ने कहा कि संग्रह की कविताओं में ईमानदारी और बेवाकी झलकती है। प्रो. नीरज तिवारी ने कविताओं में घटनाओं के सार और गहराई की सराहना की। राष्टीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक राइंका स्यालीधार के प्रधानाचार्य उमेश पाण्डे ने कहा कि कवि के जीवन की पवित्रता और साफगोई ही इन कविताओं में दिखाई दी है। छाया चित्रकार जयमित्र सिंह बिष्ट ने कविताओं को समाज का आईना बताते हुए स्व. जननेता शमशेर सिंह बिष्ट से जुड़े संस्मरण साझा किये। उत्तराखण्ड प्रेस क्लब अल्मोड़ा के अध्यक्ष जगदीश जोशी ने कहा कि साहित्य और कविताएं ही समाज में वास्तविक बदलाव लाती हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में जन सरोकारों से जुड़े लोगों ने प्रो. जोशी को बधाई दी।

नन्दा उत्सव के रंग में रंगा है उत्तराखण्ड

इन दिनों पूरा प्रदेश नन्दा उत्सव के रंग में रंगा है। मुख्य आयोजन अल्मोड़ा का नन्दा देवी कौतिक में स्वयंस्फूर्त आने वाले कौतिकार हैं। सांस्कृतिक नगरी में नन्दा-सुनन्दा के पूजन के अलावा रानीखेत उपमण्डल में इसकी धूम है। रानीखेत में नन्दादेवी उत्सव का आयोजन हो रहा है। बागेश्वर शहर में नन्दा-सुनन्दा महोत्सव का उत्साह है। नैनीताल में नयना देवी मन्दिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा है। भवाली में भी नन्दा-सुनन्दा मेले को लेकर भव्य आयोजन हुआ। डीडीहाट में नन्दा महोत्सव में स्थानीय कलाकारों ने लोक संस्कृति की झांकी प्रदर्शित की।

लघु-मझौले समाचार पत्रों के साथ सौतेला व्यवहार बन्द हो

हल्द्वानी। पर्वतीय पत्रकार महासंघ के अध्यक्ष सुरेश पाठक ने महानिदेशक सूचना को पत्र देते हुए कहा है कि लघु मझौले समाचार पत्रों के साथ सौतेला व्यवहार बन्द हो। उन्होंने इन समाचार पत्रों को विज्ञापन आवंटन प्रक्रिया में अनदेखी की बात करते हुए मानकों को सार्वजनिक करने की मांग की है। साथ ही आश्चर्य जताया है कि गैर सूचीबद्ध समाचार पत्रों को विभाग द्वारा विज्ञापन आवंटित किए गए हैं। श्री पाठक ने विज्ञापन सूचीबद्धता समिति में उचित ढंग से प्रतिनिधित्व का मामला भी उठाया है। लम्बित विज्ञापन बिलों के लिये भी अनुरोध किया है।

देवीधुरा में आषाड़ी कौतिक शुरू

चम्पावत। मां वाराही शक्तिपीठ ट्रस्ट देवीधुरा की ओर से आषाड़ी कौतिक शुरू हो चुका है। 28 अगस्त को पूजन उपाकर्म के साथ ही पारम्परिक बग्वाल तथा रात्रि जागरण की तैयारी भी है। 29 अगस्त को मां बाराही को डोली में विराजमान कर विशेष पूजन होगा। 30 अगस्त को पारम्परिक डोलदाम, शान्ति पाठ, 4 सितम्बर को कृष्ण जन्माष्टमी झांकी का आयोजन होना है।

मौसम की मार, भूस्खलन, यात्रा मार्ग में अवरोध

उत्तराखण्ड में भारी बारिश से भूस्खलन और यात्रा मार्ग में अवरोध हुआ है। पौड़ी, नैनीताल, बागेश्वर, चम्पावत में भारी वर्षा से इस प्रकार के समाचार हैं। उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली में भारी वर्षा के बाद मलबा आने से यात्रा मार्ग में अवरोध है। कर्णप्रयाग नैनीसैंन मोटर मार्ग पर पहाड़ का बड़ा हिस्सा टूटकर गिर गया। गंगोत्री हाईवे पर चढ़ेथी के पास सड़क धंसने से खतरा है। फूलों की घाटी को सुरक्षा की दृष्टि से अस्थायी बन्द किया गया। हरिद्वार सहित नदी वाले इलाकों में जलस्तर बढ़ने से सतर्क रहने को कहा गया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चुनाव के लिये घमासान और फिल्डिंग सजने लगी

कांग्रेस चौकन्नी है इस बार, भाजपा भी पैनी रणनीति में जुटी, यूकेडी की तैयारी के साथ रास्ते तलाश रही है और नाराज नेता भी तैयारी में

आगामी विधानसभा चुनाव के लिये घमासान होने लगी है और पार्टियां अपनी फिल्डिंग सजा रही हैं, इसके तहत तेज तर्रार कार्यकर्ताओं को संगठन में जिम्मेदारी देने से लेकर भविष्य के लिये आश्वासन दिया जा रहा है। बीच-बीच में पार्टियों की ओर से सख्ती दिखाते हुए कहा गया कि टिकट वितरण में बहुत सोच समझकर कदम उठाया जायेगा और कई नेताओं का टिकट कट सकता है। इस पूरे जाल जंजाल के बीच महत्वाकांक्षी नेता हर हाल चुनाव मैदान में कूदने की बात कर रहे हैं। बकायदा सोशल मीडिया में इसके लिये रील बनाकर प्रचार किया जा रहा है। दिख रहे घमासान से यह तो आसानी से अनुमान लगाया जा रहा है कि कीमत तय करने वाले खिलाड़ी भी इस गेम में होंगे और सौदे की बात पर इधर-उधर होना है। फिलहाल नाक-भौं सिकोड़ते और घिंघियाते-गरियाते नेताओं का गुस्सा दिखाई दे रहा है।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की हल्द्वानी रैली और रुद्रपुर में सम्मेलन जिस प्रकार से भीड़ जुटी उसे देख पार्टी उत्साहित है और इस बार होने वाले चुनाव के लिये चौकन्नी भी है। कांग्रेस ने पहली बार हरीश रावत को लेकर नया प्रयोग कर डाला है। प्रदेश में पार्टी के वरिष्ठ और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत को एकदम किनारे तो किया नहीं है लेकिन यह सन्देश एकदम साफ है कि इस बार चुनाव में पार्टी टिकट वितरण से लेकर पूरी रणनीति में बदलाव कर रही है। हरदा के लिये भी यह समय बहुत चुनौती वाला है क्योंकि एक ओर उन्हें पार्टी में संरक्षक वाली भूमिका निभानी

दस टिकट तो कटने ही हैं इस बार

पहली बार हरदा को लेकर नया प्रयोग

जीतने से ज्यादा हराने को खड़े होंगे

होगी दूसरा अपनी चाहतों को अपने आप सहना होगा क्योंकि कांग्रेस की टीम में पैनापन दिखाई दे रहा है। इस बात को पार्टी का शीर्ष भीी समझा हुआ है। दूसरी ओर भाजपा पैनी रणनीति में जुटी है। कई कारणों से पार्टी के कुछ नेताओं को जनता पसन्द नहीं कर रही है इसको लेकर भाजपा का मन्थन हो चुका है और वह कई दिग्गजों का टिकट कटने की बात कहती लगी लेकिन छनछन कर जो दिखाई दे रहा है कुछ ही नेताओं का टिकट कटेगा क्योंकि बनते समीकरणों में अन्त तक बहुत कुछ बदल जाता है। फिर भी दस टिकट तो इस बार कटने ही हैं। अनुमान लगाते हुए अन्य नेता भी टिकट की मांग कर रहे हैं। पार्टी की ओर से सीएम धामी के नेतृत्व में हैट्रिक का राग अलापा जा रहा है किन्तु सब जान चुके हैं कि चुनाव मामले को हल्के में नहीं लेना है। इसलिये सबको मनाने का काम भी चल रहा है। इस बीच भाजपा ने प्रदेश कार्यसमिति की घोषणा की। इसमें 121 सदस्य, 32 विशेष आमंत्रित सदस्य और 25 स्थायी आमंत्रित सदस्य बनाए गए हैं। युवाओं और महिलाओं को किसी न किसी तरह आयोजनों के द्वारा पक्ष में घेरा जा रहा है।

कांग्रेस-भाजपा की रणनीति के बीच यूकेडी अपनी तैयारी में है और रास्ते तलाश रही है कि किस तरह क्षेत्रीय मुद्दे व कुछ सीटें झटक सके। दल में इस बार युवा जोश के अलावा कुछ नये चेहरों का आगमन हुआ है, ऐसे में कुछ सीटों पर माहौल बन सकता है लेकिन इसके लिये विपक्षी एकता ही पहली शर्त है अन्यथा वोट बंटने पर गणित गड़बड़ाएगा।

इतना सब होने के बाद कुछ नेता सिर्फ इसलिये चुनाव मैदान में होंगे कि उन्हें किसी को हराना है। अपनी जीत से ज्यादा दूसरे को हराने के लिये जोड़ बनाने वालों की चर्चा भी होने लगी है। टिकट न मिलने से नाराज नेता और पार्टी की रणनीति के तहत ऐसे नेता चुनाव मैदान में उतर सकते हैं।

एमजेपी रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में आरती को पी-एचडी उपाधि

पर्वतीय क्षेत्र में कृषि संकट और पलायन रोकने हेतु व्यवहारिक समाधान सुझाए

हल्द्वानी/बरेली। महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली के क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग की शोधार्थिनी आरती जोशी उप्रेती ने 'Review and Suitable Solutions to Problems in Agriculture Hilly Area Special Reference to Pithoragrh District' विषय पर अपने शोध में पिथौरागढ़ के गंगोलीहाट एवं बेरीनाग विकासखण्डों के किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के 24वें दीक्षांत समारोह में इसके लिये उन्हें पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। यह उपाधि उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती आनन्दीबेन पटेल की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित समारोह में प्रदान की गई। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. पी. सिंह ने की।

डॉ. आरती जोशी ने अपना शोध कार्य क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग में डॉ. रुचि द्विवेदी के निर्देशन में पूर्ण किया। इस शोध यात्रा के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो.

भोला खान का मार्गदर्शन एवं सहयोग भी प्राप्त हुआ।

इस उपलब्धि पर विभाग के शिक्षकों, शोधार्थियों, सहकर्मियों तथा परिजनों ने डॉ. आरती जोशी को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल शैक्षणिक एवं शोध भविष्य की कामना की। विश्वविद्यालय परिवार ने भी इस उपलब्धि को विभाग के लिए गौरव का विषय बताया।

बताते चलें कि डॉ.आरती ने इस अध्ययन में 300 से ज्यादा उत्तरदाताओं को शामिल किया, जिनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पर्वतीय कृषि की वर्तमान स्थिति, किसानों की समस्याओं तथा पलायन के कारणों का विश्लेषण किया गया। शोध में स्पष्ट हुआ कि जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान, घटते कृषि क्षेत्र, छोटी एवं बिखरी जोतों, वर्षा आधारित खेती तथा कृषि की बढ़ती लागत के कारण पर्वतीय कृषि निरन्तर संकटग्रस्त होती जा रही है। अध्ययन के अनुसार 91 प्रतिशत परिवारों का प्रमुख व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है, जबकि 82.33 प्रतिशत किसानों के पास आधे एकड़ से भी कम भूमि है और 63 प्रतिशत किसान सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर हैं। सर्वेक्षण में यह भी सामने आया कि 78.63 प्रतिशत किसानों को कृषि ऋण उपलब्ध नहीं हो पाता, 82 प्रतिशत किसानों ने कृषि लागत को अत्यधिक बताया, 84 प्रतिशत ने आधारभूत संरचना एवं सड़क सम्पर्क की कमी।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

उत्तराखण्ड पर्यटन एवं यात्रा व्यवसाय नियमावली 2026 लागू

पुराने होटल-रिसोर्ट को पंजीकरण, नवीनीकरण करवाना अनिवार्य होगा

नैनीताल। शासनादेश दिनांक 5 जून 2026 के क्रम में उत्तराखण्ड पर्यटन एवं यात्रा व्यवसाय पंजीकरण नियमावली 2026 लागू कर दी गई है। इस नियमावली के अन्तर्गत जनपद में पूर्व से संचालित समस्त होटल-रिसोर्ट आदि, जिनके पंजीकरण की 05 वर्ष की अवधि 5 जून 2026 को पूर्ण हो चुकी है, उन्हें अपना पंजीकरण नवीनीकरण कराना अनिवार्य होगा।

जिला पर्यटन अधिकारी कीर्ति चन्द्र आर्य ने बताया कि ऐसे होटल/रिसोर्ट संचालक अपना पंजीकरण/नवीनीकरण का आवेदन विभागीय वेबसाइट पर ऑनलाइन कर सकते हैं। वेबसाइट है- www.uttarakhand.urism.gov.in पर है। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्धारित अवधि में पंजीकरण/नवीनीकरण न कराने वाले संस्थानों के विरुद्ध पंजीकरण नियमावली के प्रावधानों के अनुसार वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। अधिक जानकारी के लिये सम्बन्धित होटल रिसोर्ट संचालक जिला पर्यटन विकास अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी
सम्पर्क- 8941807388
MILAM BAKE HOUSE
CRAFTED IN THE MOUNTAINS
पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मां नन्दा-सुनन्दा उत्सव, रक्षाबन्धन, जमाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

इन्द्रा पांगती

सी 85,
सेक्टर-एन,
अलीगंज
कुर्सी रोड
(निकट शक्ति हास्पिटल एवं संगम होटल)
लखनऊ

दिनेश पांगती

804,
टावर सी
महिन्द्रा ल्यूमिनेयर
सेक्टर- 59
गुड़गांव

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा **Thats** मो. 9458920379

APNA GHAR

6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)